

Bihar Board Class 6 Sanskrit Notes Chapter 10 सामाजिकं समत्वम्

सामाजिकं समत्वम् Summary

पाठ – मनुष्यः सामाजिकः प्राणी वर्तते। समाजं विना मनुष्याणां जीवनं कठिनं भवति। एकं भवनं जनानां सहयोगेन निर्मितं भवति। केचन जनाः इष्टकानां निर्माणम् अकुर्वन्। केचन अस्य भवनस्य कपाट-गवाक्षयोः निर्माणम् अकुर्वन्। एवमेव सामाजिक-सहयोगेन एवं अनेकानि वस्तूनि निर्मितानि भवन्ति।

अर्थ – मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना मनुष्यों का जीवन कठिन हो जाता है। एक मकान लोगों के सहयोग से निर्मित होता है। कुछ लोगों ने ईंटों का निर्माण किया। किसी ने इस भवन के दरवाजा-खिड़की का निर्माण किया। इसी प्रकार सामाजिक-सहयोग से ही अनेकों वस्तुओं के निर्माण होते हैं।

पाठ – अस्माक देशे विविधाः जनाः वसन्ति। विविधान् धर्मान् ते आचरन्ति। किन्तु सर्वे भ्रातृभावेन निवसन्ति। वयं परस्परं सौहार्देन निवसामः। ईद – होलिका – क्रिसमस – प्रभृतीनाम् उत्सवानाम् अवसरेषु परस्परं सहयोगं कुर्मः।

अर्थ – हमारे देश में अनेकों लोग रहते हैं। अनेकों धर्मों का वे सब आचरण करते हैं। किन्तु सभी भाईचारे की भावना से निवास करते हैं। हमलोग आपस में प्रेम से निवास करते हैं। ईद – होली, क्रिसमस इत्यादि उत्सवों के अवसरों पर परस्पर सहयोग करते हैं।

पाठ – केचन जनाः धर्मकारणात् विवादं कुर्वन्ति। ते स्वधर्मं श्रेष्ठं वदन्ति। परधर्मं हीनं गणयन्ति। वस्तुतः सर्वे धर्माः समानाः सन्ति।

अर्थ – कुछ लोग धर्म के कारण झगड़ा करते हैं। वे लोग अपने धर्म को श्रेष्ठ बताते हैं। दूसरे के धर्म को छोटा बताते हैं। वस्तुतः सभी धर्म समान हैं।-

पाठ – एवमेव समाजे केचन संपन्नाः, केचन निर्धनाः सन्ति। सर्वे समाजस्य सदस्याः एव सन्ति। तेषु परस्परं समता भवेत्। यन्त्रस्य प्रत्येकः खण्डः अनिवार्यः अस्ति। तथैव समाजस्य सर्वे जनाः अनिवार्याः सन्ति।

अर्थ – इसी प्रकार समाज में कुछ अमीर कुछ गरीब हैं। सभी समाज के सदस्य ही हैं। उनमें परस्पर एकता होनी चाहिए। मशीन के प्रत्येक भाग की अनिवार्यता है। उसी प्रकार समाज के सभी लोगों की अनिवार्यता है।

पाठ – यदा भारतीयाः परस्परं सौहार्देन निवसामः। तदा । भारतवर्षं विश्वस्य प्रबलं राष्ट्रं भवेत्।

अर्थ – यदि भारतीय लोग आपस में प्रेम से रहते हैं तो भारतवर्ष । विश्व का प्रबल देश होगा।

शब्दार्थः – समत्वम् – समता, एकता। वर्तते – है। जनानां – लोग। सहयोगेन – सहयोग से। इष्टकानां – ईंटों का। अकुर्वन् – किये। किये थे। केचन – किन्हीं ने / कई लोगों ने। अस्य – इसका / इसकी / इसके। अस्य भवनस्य – इस भवन का। कपाटः – दरवाजा। गवाक्षयोः – खिड़कियों का। एवमेव -इसी प्रकार। एव – ही। वस्तूनि – वस्तुओं। भवन्ति – होते हैं। अस्माकं – हमारे। विविधाः जनाः – अनेक लोग। वसन्ति – रहते हैं। विविधान्-धर्मान् – अनेक धर्मों को। आचरन्ति – आचरण करते हैं। मानते हैं। सर्वे – सभी। भ्रातृभावेन – भाईचारे की भावना / भाई-भाई की भावना से। सौहार्देन – प्रेम से। प्रभृतीनाम् – इत्यादि का। उत्सवानाम् – उत्सवों के। अवसरेषु – अवसरों पर। कर्मः – करते हैं। धर्मकारणात् – धर्म के कारण से। स्वधर्मम् – अपने धर्म को। श्रेष्ठम् – श्रेष्ठ (ऊँचा)। परधमम् – दूसरों के धर्म को। हीनम् – नीच। सम्पन्नाः – सम्पन्न लोग। निर्धनाः – गरीब! तेषु – उनसबों में। भवेत् – होना चाहिए/होनी चाहिए। यन्त्रस्य -मशीन का। यदा – जब। सदा – तब। एकेकः – प्रत्येक / सभी। खण्डः – टुकड़ा / भाग।